विषय की मंजिल मिल जाती है। इस कला को एक सूत्र में कहा जा सकता है कि जीवन प्रकृति की एक गणित है, गणित का सूत्र मालुम होता है तो सवाल का जवाब मिल जाता है। ठीक इसी प्रकार जीवन जीने का सूत्र मालूम होता है तो हर विषय का उत्तर मिल जाता है। जिस प्रकार आइने में लेप नहीं लगा होता है तो दूसरे तरफ के दृश्य की ऊर्जा आती रहती है और उसका दृश्य दिखाई देता रहता है, पर जब आइने में लेप लग जाता है तो अपनी तस्वीर दिखाई देने लगती है। ठीक इसी प्रकार जब एक विषय बनाकर तीसरे नेत्र रूपी आइने के पीछे लेप लगा दिया जाता है तो दूसरा विषय नहीं आने पाता है, तब बनाए गए विषय की तस्वीर दिखाई देने लगती है और उत्तर मिल जाता है। जब तक एक विषय का उत्तर न मिल जाए तब तक दूसयरे विषय को मन में नहीं आने देना चाहिए। जब मन एक विषय पर केंद्रित हो जाता है तब शरीर के अंदर बनने वाली ऊर्जा शक्ति विषय के मार्ग को तलाश कर मंजिल पर पहुंचा देता है।

वर्तमान समय में मानव को अपनी ऊर्जा शक्ति जानने और पहचानने की जरूरत है। इसकी पहचान के बाद इसे सही दिशा में कियान्वित करने की जरूरत है। जब व्यक्ति दूसरों से प्रभावित होकर अन्य किसी के कहने के कारण अथवा परिवार के दबाव के कारण स्वभाव के विपरीत कोई कार्य करने का निर्णय ले लेता है तो कार्य पूरा होने में बाधा आती है। यदि कार्य पूरा हो भी जाता है तो नम्बर एक नहीं पहुंच पाता है। इसलिए अपने स्वभाव को ध्यान में रखते हुए विषय का चुनाव करना चाहिए। ऐसा करने से विषय रुचिकर हो जाता है और कार्य करने में मन लगता है जो मंजिल तक पहुंचाने में सहयक होता है। उपरोक्त कला को सूत्र की तरह इस्तेमाल करने से सफलता अवश्य मिलती है।